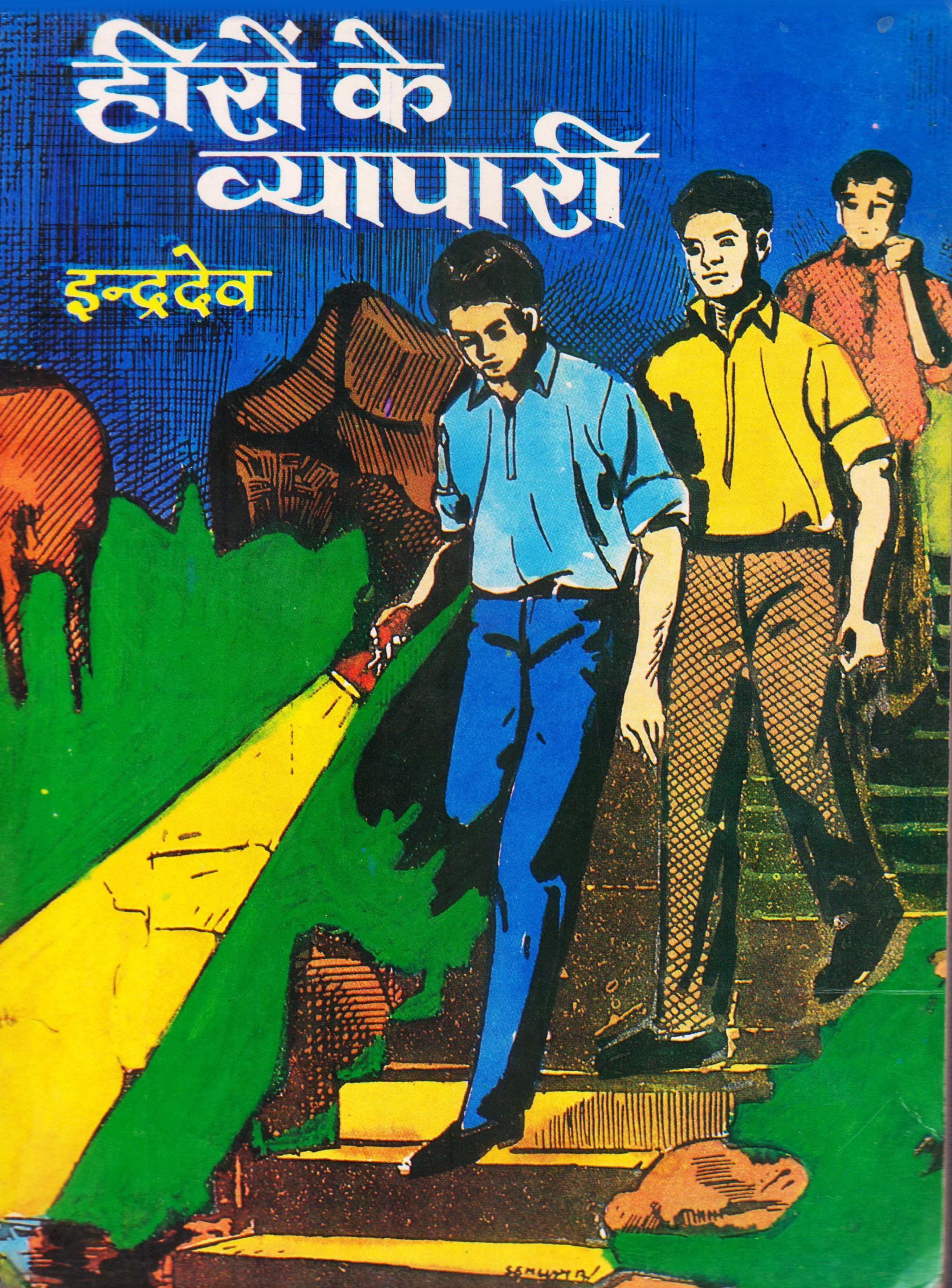
हीरों के व्यापारी

इन्द्रदेव



हीरों के व्यापारी

(रहस्य कथा)

इंद्रदेव

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण फाल्गुन 1894 (फरवरी 1973)
द्वितीय संस्करण आषाढ़ 1902 (जुलाई 1980)
तृतीय संस्करण भाद्रपद 1916 (अगस्त 1994)

ISBN 81-230-0189-4

मूल्य : 16 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केंद्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस नई दिल्ली – 110001
- कामर्स हाउस करीमभाई रोड बालार्ड पायर बंबई – 400038
- 8 एस्प्लेनेड ईस्ट कलकत्ता – 700069
- एल० एल० ए० आडीटोरियम 736 अन्नासलै मद्रास – 600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ पटना – 800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस प्रेस रोड तिरुअनंतपुरम – 695001
- 10 बी० स्टेशन रोड लखनऊ – 226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग पब्लिक गार्डंस हैदराबाद – 500001

आकाशदीप प्रिंटर्स 20 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली-110002 द्वारा मुद्रित।

दो शब्द

'हीरों के व्यापारी' एक रहस्य कथा है। 'बाल भारती' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित इस उपन्यास को पाठकों द्वारा बहुत सराहा गया था। पाठकों की रुचि को देखते हुए नवीन रेखाचित्रों के साथ पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन पहली बार काफी पहले किया जा चुका है। अब इसका पुनर्मुद्रण प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता है।

अनुक्रम

झाड़ियों में छिपी कार

''बस सर्विस कितनी खराब है'', राजेश बड़बड़ाया। ''इस सर्दी में एक मील पैदल चलना ! बाप रे !''

सुरेंद्र बोला, ''गलती तुम्हारी है जो इस बस में बैठे। यह बस तो यहीं से मुड़ जाती है। तुमसे कितना कहा था कि आज हमारे घर रुक जाओ। तुम तो अपने घर जाकर रजाई में दुबक जाओगे, लेकिन मुझे तो अभी उलटे पांव लौटना पड़ेगा।''

''लौटना नहीं पड़ेगा !''–राजेश हंस पड़ा– ''आज की रात तुम मेरे पास रुकोगे।''

''और जो कल सुबह पहुंचते ही पिताजी पीटेंगे, तब कौन बचाएगा ?'' सुरेंद्र ने मुंह चिढ़ाया। ''ना बाबा, मैं तो अभी जाऊंगा। पिताजी ने कह भी दिया था कि राजेश को पहुंचा कर तुरंत लौट आना।''

''मैंने बाहर आते समय तुम्हारे पिताजी से कहा दिया था कि सुरेंद्र आज मेरे पास रुकेगा। उन्होंने हां कर दी थी।'' राजेश बोला।

''कमाल है भई ! कह कब दिया तुमने ! हम दोनों साथ-साथ ही तो थे। मैंने तो नहीं सुना !'' सुरेंद्र ने बनावटी आश्चर्य से कहा– ''तुम भी जासूस होते जा रहे हो।''

''वह तो हम हैं ही'', राजेश ने कहा–''अच्छा, अब जल्दी-जल्दी चलो, वरना अपनी तो कुल्फी जम जाएगी सर्दी से।''

''चलो, हो जाए रेस !''

सुरेंद्र और राजेश तेजी से बढ़ चले। दूर कृष्णा कालोनी की बत्तियां चमक रही थीं। दिसंबर की वह रात बहुत ही ठंडी थी। रात के दस बजे थे। सुरेंद्र अपने दोस्त राजेश को कृष्णा कालोनी तक छोड़ने आया था। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे और पक्के दोस्त थे।

दूर कहीं इंजन की सीटी गूंजी और अंधेरे में रोशनी चमकने लगी। कोई ट्रेन धड़धड़ाती हुई आ रही थी। रेलवे लाइन सड़क के एकदम पास से गुजरती थी। वे दोनों पास से जाते डिब्बों को देखने लगे। तभी खड़खड़ाहट की आवाज हुई और ट्रेन धीमी होकर थोड़ी दूरी पर रुक गई।

''ट्रेन रुकी क्यों ?''–राजेश बोला–''स्टेशन तो बहुत दूर है यहां से !''

''हो सकता है कोई आदमी गाड़ी में बिना टिकट यात्रा कर रहा हो। शायद उसी ने यहां उतरने के लिए जंजीर खींच दी हो,'' सुरेंद्र ने कहा और दोनों रुकी हुई ट्रेन की दिशा में बढ़ने लगे।

तभी हवा में एक चीख गूंज गई। उन्होंने देखा कि एक डिब्बे से कूदकर एक आदमी भाग रहा है। वह आदमी उन दोनों की ओर ही भागता चला आ रहा था।

''ठहरो !'' राजेश रुक गया—''तुमने अभी एक चीख सुनी ? मामला कुछ गड़बड़ लगता है।''

''हां, सुनी तो थी,'' सुरेंद्र ने कहा—''शायद यह आदमी गाड़ी में किसी से मार-पीट करके भागा है। देखो, देखो, वह इधर ही आ रहा है। हमें एक तरफ हो जाना चाहिए। कहीं हमसे मार-पीट न करने लगे। आसपास कोई है भी नहीं, जो हमें बचा लेगा।''



''हमने उस आदमी का क्या बिगाड़ा है जो हमसे लड़ेगा !'' राजेश ने आश्चर्य से कहा।

''अरे, बदमाशों का क्या है, चाहे जिससे लड़ पड़ें,'' सुरेंद्र ने कहा।

राजेश और सुरेंद्र सड़क के किनारे झाड़ियों के पीछे छिप गए और वहीं से झांक-झांक कर देखने लगे।

लेकिन वह आदमी इन दोनों के पास नहीं आया। कहीं पीछे ही रुक गया, क्योंकि अब सड़क पर उसके दौड़ने की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। फिर एक नई आवाज गूंजी, एक तेज गुर्राहट-सी और एक कार तेजी से उनके सामने से गुजर गई।

''यह कार.......इसकी बत्तियां बुझी हुई हैं,'' राजेश फुसफुसाया।

''वह आदमी शायद इसी में बैठ कर भागा है। यह कार जरूर आगे झाड़ियों में छिपी खड़ी थी।'' सुरेंद्र ने पीछे मुड़ कर देखा।

''और पहले से उस आदमी के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह आदमी पहले से जानता था कि कार यहां खड़ी है,'' राजेश कुछ सोचते हुए बोला– ''वरना वह दौड़ कर इधर ही क्यों आया ? इसका मतलब तो यह हुआ कि इस जगह ट्रेन जान-बूझ कर रोकी गई।''

राजेश और सुरेंद्र झाड़ियों के पीछे से बाहर आकर ट्रेन की ओर चल दिए। ट्रेन अब भी रुकी हुई थी। कई यात्री डिब्बों से उतर पड़े थे। उनके बोलने की आवाजें आ रही थीं।

''आखिर वह कार खड़ी कहां थी ? हमें तो दिखाई नहीं दी,'' राजेश ने कहा और टार्च की रोशनी में इधर-उधर देखने लगा।

''अरे, खड़ी होगी कहीं ! हमें क्या मतलब ? आओ, घर चलें। न जाने क्या बात हो ! मुझे तो डर लग रहा है,'' सुरेंद्र ने कहा और राजेश का हाथ पकड़ कर खींचने लगा।

''इसमें डर की क्या बात है,'' राजेश ने हाथ झटक कर छुड़ा लिया– ''अपनी किताब की वह कहानी भूल गए ? दो बच्चे इसी तरह एक रहस्य की खोज करते हैं। वे किसी से भी नहीं डरते !''

''भैया, वे किताब की बातें हैं– कहानियां हैं !''–सुरेंद्र बोला।

''हूं, तो तुम्हारा मतलब है कि किताबों में झूठी बातें लिखी होती हैं !'' राजेश ने खीझ कर कहा, ''अच्छा, तुम यहीं से घर लौट जाओ। मैं तो ट्रेन के पास जाकर पता करूंगा कि क्या मामला है।''

''राजेश, तू मुझे डरपोक समझता है ?''–सुरेंद्र बोला, ''मैं तो ऐसे ही कह रहा था। चलो, कहां चलना है ? मैं भी साथ चलूंगा।''

''अब हुई न सुरेंद्र जैसी बात !'' राजेश मुस्कुरा दिया।

"दोनों दोस्त एक-दूसरे का हाथ थाम कर आगे चल दिए। राजेश टार्च की रोशनी कभी इधर फेंकता, कभी उधर। एकाएक वह ठिठक गया और ध्यान से झुक कर देखने लगा।

"क्या है ?", सुरेंद्र ने पूछा।

"यह देखो, टायरों के निशान।" राजेश ने सुरेंद्र को इशारा किया, "ये निशान झाड़ियों के पास से सड़क की ओर गए हैं। मेरा ख्याल है कार इन्हीं झाड़ियों के पीछे खड़ी थी।"

सुरेंद्र ने भी देखा और बोला, "यही बात है। ये निशान एकदम अभी के मालूम होते हैं।"

एकाएक राजेश ने आगे बढ़ कर झाड़ियों के पीछे से कोई काली-सी चीज उठा ली।

"क्या है, राजेश ?"

"लो, तुम टार्च पकड़ो मैं देखता हूं," कह कर राजेश ने टार्च सुरेंद्र के हाथ में थमा दी।

वह काली-सी चीज एक पाकेट डायरी थी। राजेश ने पहला पन्ना पलटा। वहां एक नाम लिखा था। फिर न जाने क्या हुआ कि डायरी उसके हाथ से छूट कर गिर गई।

"क्या लिखा था उसमें ?" सुरेंद्र ने पूछा, "बोलो न ?"

"सुरेंद्र," राजेश की आवाज कांप रही थी—"डायरी में नारायण भाई का नाम लिखा है।"

"कौन...... तुम्हारे बड़े भाई, जो दिल्ली में रहते हैं ? शायद किसी अखबार के संवाददाता हैं," सुरेंद्र ने कहा, "लेकिन वह इतनी दूर क्या करने आएंगे ? और फिर पिछले हफ्ते ही तो वह यहां होकर गए हैं। अरे, कोई और नारायण होगा, यार !"

"नहीं, सुरेंद्र ! यह डायरी नारायण भाई की ही है। मैं उनकी लिखावट अच्छी तरह पहचानता हूं", राजेश बोला।

"तब ?"

"यही तो मैं सोच रहा हूं।"

"यानी मामला कुछ गड़बड़ नजर आ रहा है," सुरेंद्र भी सोच में पड़ गया।

"अभी पिछले सप्ताह जब नारायण भाई यहां आए थे, तो यह डायरी मैंने उनके पास देखी थी," राजेश कह रहा था, "अगर वह यहां थे, तो कहां चले गए ?"

"हमें पता लगाना चाहिए," सुरेंद्र ने अपनी राय दी।

एकाएक राजेश ने सुरेंद्र का हाथ कस कर पकड़ लिया। धीरे से बोला, "तुम मेरे पक्के दोस्त हो न, सुरेंद्र ?"

''क्यों, आज कैसे संदेह हो गया !'' सुरेंद्र को आश्चर्य हो रहा था।

''तो यह डायरी वाली बात किसी से मत कहना। जब तक मैं न कहूं, चुप रहना।''

''क्या अपने पिताजी को भी नहीं बताओगे ?''

''नहीं, अभी नहीं। वह तो नारायण भाई से वैसे ही नाराज रहते हैं। उन्हें बताना ठीक नहीं। मैं पहले अपने आप कुछ पता लगाना चाहता हूं।''

''ठीक है, लेकिन अब तो घर चलो'', सुरेंद्र बोला, ''बहुत देर हो गई।''

''चलो,'' राजेश ने कहा। वह मुड़ कर रेलवे लाइन की ओर देखने लगा। गाड़ी अब भी खड़ी थी। कुछ लोग जल्दी-जल्दी इधर-उधर आ-जा रहे थे।

''पता नहीं क्या बात है !'' वह धीरे से बड़बड़ाया। काली डायरी में लिखा नारायण भाई का नाम बार-बार उसकी आंखों के सामने तैर रहा था।

दाढ़ी वाला अजनबी

सुरेंद्र को साथ लेकर राजेश जब घर पहुंचा तो रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी। पूरे रास्ते राजेश अपने में खोया-खोया चलता रहा। बार-बार मन में घटना स्थल पर घटी घटनाएं और नारायण भाई के घर न आने की बात घूम रही थी।

इस उलझन में राजेश इतना गहरा डूब गया था कि उसने रास्ते में सुरेंद्र की किसी बात का जवाब नहीं दिया।

खटखटाने पर दरवाजा घर के पुराने नौकर भीखू ने खोला। फिर वह अपनी कोठरी में सोने चला गया। भीखू की कोठरी कोठी के पीछे वाले बगीचे के एक कोने में बनी थी। राजेश के पिता सो चुके थे। वह सुरेंद्र को अपने कमरे में ले गया। दोनों कुछ देर तक बातें करते रहे, फिर सुरेंद्र की पलकें झपकने लगीं। वह तो सो गया, पर राजेश को नींद न आई। वह बिस्तर पर लेटा करवटें बदलता रहा। फिर उठकर इधर से उधर घूमने लगा। बीच-बीच में नारायण भाई की डायरी को भी उलट-पलट लेता था। शक की कोई गुंजाइश नहीं थी। डायरी उन्हीं की थी।

धीरे-धीरे रात का सन्नाटा और भी गहरा हो गया। बाहर लान में तेज हवा पेड़ों के पत्तों को जोर-जोर से हिला रही थी। खिड़कियों के शीशों पर ओस की बूंदें बह रही थीं। हर तरफ फीकी चांदनी फैली थी।

एकाएक कहीं दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी। राजेश चौंक कर उधर-उधर देखने लगा कि दरवाजा किसने खोला है ? मां, पिताजी या बड़ी बहन नीता ने ? उसने बाहर निकल कर झांका। सब कमरों के दरवाजे बंद थे। यह देख कर राजेश चक्कर में पड़ गया। दरवाजे बंद थे, लेकिन उसके कानों ने दरवाजा खुलने की आवाज साफ-साफ सुनी थी। कहां, किधर ? तभी आवाज फिर से सुनाई दी।

राजेश ने कान लगाकर सुना तो लगा कि आवाज कोठी के बाहर से आई है। एक नजर सोते हुए सुरेंद्र पर डाली, फिर खिड़की से बाहर झांकने लगा। उसके कमरे की खिड़कियां कोठी के पिछवाड़े की ओर खुलती थीं।

उसकी दृष्टि अपने-आप लान के कोने में चली गई। भीखू की कोठरी में उजाला हो रहा था और वह कोठरी के दरवाजे में खड़ा था। कुछ देर वह यूं ही खड़ा ही रहा, फिर धीरे-धीरे कोठी की चारदीवारी की तरफ बढ़ चला।

राजेश अचरज से ताकता रह गया। यह बात समझ में न आई कि आधी रात के समय कड़कड़ाती ठंड में भीखू क्यों बाहर आया था ? भीखू चारदीवारी के पास खड़ा बाहर न जाने क्या देखने की कोशिश कर रहा था।

तभी चारदीवारी के दूसरी ओर एक आदमी दिखाई दिया। अगले ही पल वह उछलकर अंदर आ गया। राजेश की धड़कन तेज हो गई। सिर घूमता-सा लगा। आखिर यह हो क्या रहा है ? भीखू ने उस व्यक्ति का हाथ पकड़ लिया, फिर जल्दी से कोठरी में घुसकर दरवाजा बंद कर लिया।

राजेश को अब भी अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। भीखू लगभग पच्चीस वर्षों से उनके घर में नौकरी कर रहा था—यानी राजेश के पैदा होने के भी बहुत पहले से। राजेश के पिता उसकी ईमानदारी के कायल थे। लेकिन इस समय, आधी रात को राजेश की आंखों के सामने जो कुछ हो रहा था, क्या उसे देखकर भी भीखू को ईमानदार कहा जा सकता था ? इस कड़कड़ाती सर्दी में आधी रात के बाद, किसी दूसरे के घर में पिछली दीवार फांदकर आने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से कोई बदमाश था। और वह भीखू के कमरे में था। हाव-भाव से तो यही लगता था जैसे भीखू उसे जानता हो। तब ?

एक बार राजेश के मन में आया कि पिताजी को जगाकर सब पता दे। लेकिन अगर इतनी देर में वह अजनबी भाग गया तो ? कुछ सोचकर राजेश ने तय किया कि वह स्वयं बाहर जाकर इस रहस्य का पता लगाएगा। इसमें खतरा था, लेकिन साहसी राजेश ने सोच-विचार में ज्यादा समय बर्बाद नहीं किया। बहुत धीरे-से पिछला दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। बाहर आते समय उसने एक चादर ओढ़ ली थी। पल भर में शरीर सुन्न हो गया। ठंड बहुत ज्यादा थी। कोठी की चारदीवारी के साथ-साथ झाड़ियों की ऊंची बाढ़ उगी थी। उसके और चारदीवारी के बीच जमीन की एक संकरी पट्टी थी। उसी पर नंगे पैरों दौड़ता हुआ राजेश जल्दी ही भीखू की कोठरी के पीछे जा पहुंचा।

कोठरी की पिछली दीवार में बनी एक छोटी-सी खिड़की से उसने उचक कर देखा। अंदर एक दाढ़ी वाला व्यक्ति खड़ा दिखाई दिया। भीखू सिर झुकाए चारपाई पर बैठा था। वह रो रहा था। दाढ़ी वाले ने कहा, ''अब चुप भी हो जाओ। लो, मेरा पता। कल शाम को यहां आ जाना। अब जाना है, वक्त नहीं है।'' यह कहकर उसने भीखू को एक कागज थमा दिया, फिर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

राजेश देखता-सुनता रहा। इसका मतलब यही था कि बातचीत हो चुकी थी। काश, किसी तरह उस कागज को देख पाता जो दाढ़ी वाले ने भीखू को दिया था, उससे पता चल जाता कि दाढ़ी वाले ने भीखू को कल शाम कहां बुलाया है।

भीखू भी दाढ़ी वाले के साथ कोठरी से बाहर निकल गया। राजेश सोच रहा था—कल भीखू इस दाढ़ी वाले के पास जाएगा। कहीं भीखू किसी अपराधी से मिलकर हमारे परिवार के विरुद्ध कोई षडयंत्र तो नहीं रच रहा है ?

भीखू और वह अजनबी बाहर भी कुछ बातें कर रहे थे। राजेश को साफ-साफ नहीं सुनाई दिया। आगे जाने में उसे खतरा था। कुछ देर बाद दाढ़ी वाला अजनबी जैसे आया था, उसी तरह दीवार फांदकर बाहर कूद गया। भीखू कोठरी में चला आया। अंदर जलने वाली रोशनी बुझ गई।

राजेश धीरे-धीरे अपने कमरे में लौट आया। घर में सब आराम से सो रहे थे। लेकिन उसकी आंखों से नींद गायब हो चुकी थी। एक के बाद दूसरी घटनाएं घट रही थीं। पहले घटनास्थल पर नारायण भाई की डायरी मिली। अब भीखू का विचित्र व्यवहार देखने को मिल रहा था।

राजेश ने तय कर लिया कि उसे क्या करना है। वह फिर बाहर निकला और इस बार भीखू की कोठरी के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। दरवाजा खटखटाकर धीरे से पुकारा "ओ भीखू काका, सो गए क्या ?"

अंदर एकदम बत्ती जल गई। दरवाजा खुला और भीखू बाहर निकल आया। राजेश को देखते ही वह बुरी तरह चौंका, जैसे चोरी करते पकड़ा गया हो। राजेश ने देखा कि भीखू बार-बार चारदीवारी की ओर देख रहा है—जहां से वह दाढ़ी वाला कूदकर बाहर गया था।

"कैसे.........क्या.........राजेश भैया ! इस वक्त यहां ? कितनी देर से ?" भीखू जल्दी-जल्दी पूछ गया। उसकी आवाज कांप रही थी।

राजेश दोनों हाथों से पेट दबाकर बोला, "भीखू काका, पेट में बुरी तरह दर्द हो रहा है। मुझे कहीं से यह दवा ला दो।" और उसने दवा का एक पुराना नुस्खा भीखू को थमा दिया। नुस्खे वाला पर्चा कमरे से आते समय वह साथ लाया था, अपनी योजना के अनुसार।

"तो किसी डाक्टर को......" भीखू ने कहना चाहा।

"नहीं, नहीं, मैं पिताजी को नहीं बताना चाहता। मैं देर से लौटा हूं न। वह बहुत नाराज होंगे। तुम स्टेशन चले जाओ। वहां किसी न किसी कैमिस्ट की दुकान जरूर खुली होगी। बस, तुरंत चले जाओ। हाय, दर्द बहुत जोर का है। जल्दी जाओ, मेरी साइकिल ले लो। तब तक मैं तुम्हारी कोठरी में ही बैठता हूं।"

भीखू के हाव-भाव से लगा कि वह गहरे असमंजस में फंस गया है। लेकिन राजेश ने कुछ इस ढंग से बात बनाई कि उसके सामने स्टेशन जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

भीखू ने राजेश की साइकिल उठाई और कोठी के अगले दरवाजे से सड़क पर निकल गया।

राजेश मुस्कुराया। स्टेशन तक जाने और लौटने में भीखू को कम-से-कम बीस मिनट जरूर लगते। इतनी देर में दाढ़ी वाले व्यक्ति का दिया कागज बड़ी आसानी से ढूंढा जा सकता था। राजेश यह भी जानता था कि इस समय स्टेशन पर दवाइयों की कोई दुकान नहीं खुली होगी। लेकिन भीखू

को उसकी कोठरी से कुछ समय के लिए दूर भेजने का इससे अच्छा बहाना और दूसरा कौन-सा हो सकता था भला ?

राजेश ने भीखू की कोठरी में इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। हर चीज बेतरतीब फैली थी। तभी भीखू के बिस्तर पर तकिए के नीचे झांकता एक छोटा-सा कागज दिखाई दिया। राजेश ने झपट कर उठा लिया। टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा था-- लाल हवेली, 5 पीरबहार रोड।

पीरबहार रोड शहर से बाहर जाती थी। उस पर कोठियां बहुत दूर-दूर बनी हुई थीं। वहीं की किसी कोठी का पता लिखा था उसमें। तो उस दाढ़ी वाले से मिलने के लिए यहीं जाने वाला है कल शाम भीखू ! राजेश ने पता याद कर लिया, फिर कागज उसी तरह तकिए के नीचे रखकर दरवाजे में आ खड़ा हुआ।

थोड़ी देर के बाद भीखू लौट आया। आते ही उसने कोठरी में इधर-उधर नजर डाली, फिर बोला, "दवा तो नहीं मिली राजेश भैया। सब दुकानें बंद थीं। अब दर्द कैसा है ?"

"अब तो कुछ आराम है भीखू काका।" राजेश ने पेट को दबाकर धीरे से कहा। फिर बोला, "मैंने ठंड में नाहक परेशान किया तुम्हें।"

"अरे नहीं, भैया ! परेशानी कैसी ! चलो, मैं तुम्हारे साथ अंदर चलता हूं। पानी गरम कर दूंगा। उससे सेक लेना। आराम आ जाएगा।" भीखू ने मीठे स्वर में कहा।

सुनकर राजेश को लगा, भीखू जरा भी नहीं बदला है, वही पुराना भीखू काका है जो छुटपन में उसे घंटों गोदी में खिलाया करता था। लेकिन..........लेकिन............कुछ देर पहले उसने जो कुछ देखा है या कल शाम 5 पीरबहार रोड में जो कुछ देखने को मिलेगा, क्या उसके बाद भी भीखू काका के बारे में उसकी यही राय बनी रहेगी ?

भीखू को समझाकर राजेश कमरे में लौट आया। सुरेंद्र आराम मे सो रहा था। और राजेश सोच रहा था--देखें कल क्या गुल खिलता है ?

पुरानी हवेली

"राजेश, तुमने पढ़ा ? रात को हमारी कालोनी के पास जयनगर एक्सप्रेस में हीरों के एक व्यापारी को जान से मार दिया गया। बदमाश उसके हीरे लूट कर भाग गए," राजेश के पिताजी ने अखबार पढ़ते हुए कहा– "हीरों का व्यापारी कुछ बहुमूल्य हीरे एक राजा को देने के लिए ले जा रहा था। किसी को कुछ पता न चले, इसलिए वह तीसरे दर्जे के डिब्बे में सफर कर रहा था। लेकिन शायद



बदमाशों को यह पहले ही पता चल गया था। उनका एक आदमी भी उसी डिब्बे में था। जब व्यापारी बाथरूम से निकल रहा था, तो बदमाश ने उसके पेट में छुरा घोंप दिया और फिर जंजीर खींच कर गाड़ी से उतर गया। डिब्बे के लोगों का कहना है कि उन्होंने एक आदमी को भागते हुए देखा था। पिछले सप्ताह में इस प्रकार की यह चौथी घटना है।"

राजेश समाचार सुन रहा था और उसका चेहरा पीला पड़ता जा रहा था। रात की सब घटनाएं फिर से उसकी आंखों के आगे नाच गईं। हां, गाड़ी रुकते ही एक आदमी को तो उसने भी डिब्बे से कूदते देखा था। एक बार उसका मन हुआ कि पिताजी को रात की एक-एक बात बता दे और यह भी कह दे कि नारायण भाई की डायरी उसे घटना स्थल पर मिली है। पर चुपचाप सारी खबर सुन कर वह घर से बाहर निकल पड़ा। सुरेंद्र भी उसके साथ था।

"तुमने खबर सुनी ?" राजेश ने पूछा।

"हां, तो वह चिल्लाने की आवाज मरते हुए व्यापारी की थी। गाड़ी से कूद कर भागने वाला आदमी हत्यारा था और नारायण भाई......"

"सुरेंद्र......" राजेश ने बीच में ही उसकी बात काट दी–"चलो, हम खोज करते हैं। अपना वायदा याद रखना कि उस डायरी के बारे में किसी से कुछ नहीं कहोगे।"

"नहीं कहूंगा," सुरेंद्र ने कहा। दोनों दोस्त फिर उसी सड़क पर पैदल चल पड़े।

"हम जा तो रहे हैं, पर रात वाली जगह को पहचानेंगे कैसे ? अब तो गाड़ी खड़ी नहीं होगी जो अनुमान लग जाए !" इधर-उधर देखते हुए राजेश ने कहा।

"हां, कार के टायरों के निशान भी अब नहीं मिलेंगे," सुरेंद्र बोला–"देखो मुझे याद आ रहा है कि रात को ट्रेन इस पुलिया से परे रुकी थी," उसने सड़क पर बनी एक पुलिया की ओर संकेत किया, "और ट्रेन से कुछ पीछे वह जगह रही होगी।"

"ठीक है, मुझे भी याद आ गया," राजेश बोला– "इधर बाईं तरफ से झाड़ियों में देखते चलेंगे। आज छुट्टी है, कोई जल्दी तो है नहीं हमें। क्यों ?"

"हां, चलो।"

दोनों ध्यान से झाड़ियों में देखते हुए आगे बढ़ने लगे। अब पुलिया पीछे छूट गई थी। एकाएक उनके कदम ठिठक गए। राजेश ने देखा कि उससे थोड़ी दूर एक आदमी झाड़ियों के बीच झुक कर कुछ खोज रहा है।

"शी....." सुरेंद्र ने उसका हाथ दबा दिया। दोनों झाड़ियों में छिप कर उस आदमी की ओर देखने

लगे। उस व्यक्ति को राजेश और सुरेंद्र के आने के बारे में कुछ भी पता नहीं चला था। वह अब भी उसी तरह झुक कर न जाने क्या खोज रहा था।

तभी वह व्यक्ति मुड़ा और राजेश के होंठों से चीख निकलते-निकलते रह गई। सामने नारायण भाई खड़े थे। राजेश स्तंभित-सा खड़ा रह गया। तो इसका मतलब उसका अनुमान सही था। शायद नारायण भाई यहां अपनी खोई हुई डायरी की खोज में आए हैं। एक बात उसे रह-रहकर परेशान कर रही थी कि नारायण भाई घर के इतना पास रह कर भी घर क्यों नहीं आए ? क्या नारायण भाई का संबंध भी हीरा-चोरों से हो गया है ? अब वह अपने को रोक नहीं सका। उसने पुकारा, ''नारायण भाई !'' और अपने छिपने की जगह से बाहर आ गया।

उसे देखते ही नारायण भाई का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया। वह कुछ पल राजेश की ओर ताकते रहे, फिर तेजी से एक तरफ चल दिए।

राजेश की आंखों में आंसू आ गए। सुरेंद्र का हाथ थाम कर वह भी नारायण भाई के पीछे दौड़ पड़ा। लेकिन नारायण भाई ने मुड़ कर नहीं देखा। वह तेजी से चलते हुए आगे जाकर झाड़ियों के पीछे छिप गए।

''नारायण भाई बात तो सुनिए'', राजेश पुकारता रह गया।

''ताज्जुब है कि नारायण भाई तुमसे बोले तक नहीं।'' –सुरेंद्र ने सामने देखते हुए कहा।

''न जाने इन्हें क्या हो गया है !'' राजेश रुंधे कंठ से बोला।

''पिछले सप्ताह तो एकदम ठीक थे। खूब हंस-हंस कर बातें करते थे। पता नहीं.....'' वह रो पड़ा।

तभी झाड़ियों के पीछे से एक काली कार निकली और सर्र से इन दोनों के पास से गुजर कर आगे चली गई।

''राजेश, नारायण भाई इसी कार में गए हैं, मैंने देखा है।'' सुरेंद्र चीख पड़ा, ''कार में एक आदमी और भी था।''

''हमें उसके पीछे चलना चाहिए, लेकिन.....'' राजेश बड़बड़ाया। आगे काली कार बड़ी तेजी से जा रही थी। तभी उसकी नजर सामने से आते एक ट्रक पर पड़ी। राजेश सड़क के बीचोंबीच खड़ा होकर हाथ हिलाने लगा। राजेश ने सोचा अगर ट्रक वाला हमें बैठा ले तो हम उस काली कार का पीछा कर सकते हैं।

लेकिन ट्रक रुका नहीं। राजेश निराश हो गया। तभी उसने देखा कि सुरेंद्र ने हाथ के इशारे से एक कार को रोक लिया है। वह ड्राइवर से बात कर रहा था।

"आपकी बड़ी मेहरबानी होगी, प्लीज। वह हमसे नाराज होकर अगली कार में चले गए हैं," सुरेंद्र कह रहा था। राजेश को अपनी ओर बढ़ते देख कर उसने आंख दबा कर इशारा किया। मतलब यह था कि वह चुप रहे। राजेश चुप खड़ा रहा। कार में दो व्यक्ति बैठे थे। कार का ड्राइवर कुछ पल सोचता रहा। फिर उसने पिछली सीट का दरवाजा खोल दिया। पलक झपकते ही राजेश और सुरेंद्र अंदर बैठ गए और कार चल दी।

"तुम्हारा मतलब है कि अगली कार में तुम्हारे भाई बैठे हैं ?"—कार चलाने वाले ने पूछा।

"जी हां," सुरेंद्र ने जवाब दिया, "और वह नाराज होकर जा रहे हैं। मेहरबानी करके कार तेजी से चलाइए। अगर वह कार ओझल हो गई, तो फिर उनका पता नहीं चलेगा। मां ने कहा है चाहे जैसे हो, भाई को साथ लेकर आना।"

"ऐसा !" उस व्यक्ति ने कहा और बहुत तेज गति से कार दौड़ाने लगा। धीरे-धीरे दोनों कारों के बीच की दूरी कम होने लगी।

शाम घिर चली थी। सड़क के दोनों ओर खड़े घने पेड़ों के कारण अंधेरा छाने लगा था। दोनों ओर लहलहाते खेत थे। बस्ती काफी पीछे छूट चुकी थी। खेतों के परे बहती नदी का पानी डूबते सूर्य की किरणों में लाल-लाल चमक रहा था।

तभी आगे-आगे जाती काली कार की चाल धीमी हो गई। इस कार के ड्राइवर ने भी अपनी कार की गति कम कर दी। जरा आगे बाईं तरफ मैदान में एक पुरानी-सी हवेली दिखाई दे रही थी। राजेश और सुरेंद्र ध्यान से देख रहे थे। एकाएक वह काली कार घूमी और उस हवेली के अंदर चली गई।

इनकी कार हवेली से थोड़ा पहले ही रुक गई। "तुम्हारे भाई इस हवेली में रहते हैं क्या ?"—कार वाले ने मुड़ कर पूछा।

"नहीं ? नहीं तो......" राजेश बोला, "पता नहीं, यहां क्या करने आए हैं ?"

"अब तुम लोग क्या करोगे ?"—कार वाला पूछ रहा था।

"जी, हवेली में जाकर भाई से बात करेंगे," सुरेंद्र बोला।

"तो ठीक है, तुम जाकर उनसे बात कर लो। अगर वह लौटते हैं तो ठीक, वरना तुम आ जाना। मैं तुम्हें शहर छोड़ आऊंगा," कार वाला बोला।

राजेश और सुरेंद्र उसकी ओर देखते रहे। वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या जवाब दें।

"बच्चो मैं तुमसे काफी बड़ा हूं," कार वाले ने कहा, "लगता है तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो।"

"जी नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं," राजेश बोला, "अब आप क्यों कष्ट करेंगे ? हम अपने भाई के साथ चले जाएंगे। हम उन्हें जैसे भी होगा, मना लेंगे।"

कार वाला कुछ देर सोचता रहा। फिर बोला, ''तुम्हारी मर्जी।''

राजेश और सुरेंद्र बाहर आ गए। उन्होंने देखा कि कार घूम कर शहर की ओर चली गई है। उन्हें कुछ अचरज हुआ। कार तो पहले भी शहर से ही आ रही थी। तब घूम कर वापस क्यों चली गई ?

कहीं कोई नहीं था। सूरज डूब चुका था। पेड़ों पर पंछी तरह-तरह की बोलियां बोल रहे थे। दोनों कुछ पल सुनसान सड़क पर खड़े रहे। फिर धीरे-धीरे उस हवेली की ओर चल दिए।

हवेली के सामने और दोनों तरफ काफी पेड़-पौधे थे। राजेश और सुरेंद्र पेड़ों के पीछे छिप कर हवेली की ओर देखने लगे। वहां एकदम सन्नाटा था। हवेली के बाहर वाला लान एकदम जंगल जैसा हो रहा था। लगता था जैसे वहां कोई रहता ही न हो। वह काली कार भी पता नहीं कहां छिप गई थी ? लेकिन संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी। राजेश और सुरेंद्र ने उस काली कार को अपनी आंखों से इसी हवेली में प्रवेश करते देखा था।

''अब ?'', सुरेंद्र फुसफुसाया।

''हमें अंदर ज़ाकर देखना होगा,'' राजेश बोला, ''तुम्हें डर तो नहीं लगता ?''

''अपने से पूछो,'' सुरेंद्र ने हंसने की कोशिश की।

''लगता तो है,'' राजेश गंभीर हो गया, ''लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि नारायण भाई यहां क्या कर रहे हैं ? उनका हीरे के चोरों से क्या संबंध है ? कुछ भी हो, वह मेरे भाई हैं। अगर हम पर कोई संकट आएगा, तो वह चुपचाप देखते नहीं रहेंगे।''

सुरेंद्र ने कुछ पत्थर उठा कर पैंट और कोट की जेबों में भर लिए। वह बोला, ''तुम भी कुछ पत्थर ले लो। हो सकता है काम आएं।''

सुरेंद्र की देखा-देखी राजेश ने भी अपनी जेबों में कुछ नुकीले पत्थर भर लिए और बोला, ''हमें पीछे से चलना चाहिए। हो सकता है इधर से जाने पर कोई देख ले।''

''ठीक है चलो,'' सुरेंद्र ने कहा। फिर दोनों पेड़ों के बीच से होते हुए हवेली के पिछवाड़े की ओर बढ़ने लगे। सूरज छिपने के साथ ही हवा बहुत ठंडी हो गई थी।

हवेली का पिछला हिस्सा एकदम सुनसान था। यहां से नदी एकदम पास दिखाई दे रही थी। हवेली और नदी के बीच मुश्किल से बीस-पच्चीस गज का अंतर होगा।

दोनों कुछ पल इधर-उधर देखते रहे। तभी राजेश की नजर नदी में खड़ी एक नाव पर पड़ी। नाव में कोई नहीं था।

"देखो वहां चारदीवारी कुछ टूटी हुई सी है," सुरेंद्र ने सामने की ओर संकेत किया। घनी झाड़ियों के बीच टूटी चारदीवारी दिखाई दे रही थी।

दोनों टूटी चारदीवारी पार करके अंदर चले गए। सब तरफ घनी झाड़ियों का जंगल था। हवेली के पिछवाड़े की हर खिड़की बंद दिखाई दे रही थी। लेकिन दरवाजा खुला हुआ था।

"दरवाजा खुला है। अंदर कोई है," राजेश फुसफुसाया।

"एक आदमी अंदर जाए और दूसरा बाहर खड़ा होकर पहरा दे," सुरेंद्र ने सलाह दी।

"नहीं भई, यह नहीं होगा," राजेश बोला, "जहां जाएंगे, साथ जाएंगे। चलो, देखते हैं क्या मामला है। दोनों एक साथ रहेंगे, तो कोई एकाएक कूद कर हमला नहीं कर सकेगा और फिर अपने नारायण भाई भी तो हैं।"

"तुम फिर उनकी बात कर रहे हो ! वह बदल गए हैं। अगर ऐसा न होता, तो वह तुम्हारे पुकारने पर यों न चले जाते," सुरेंद्र बोला।

"वही तो देखना है। आओ," राजेश बोला।

अंदर घुप्प अंधेरा था। दोनों टटोल-टटोल कर चल रहे थे। उन्हें डर लगने लगा। एकाएक राजेश रुक गया। बोला, "तुमने सुना ?"

"क्या ?"

"बातें करने की आवाज। पास ही कहीं कुछ लोग बातें कर रहे हैं।"

सुरेंद्र ने कान लगाए, तो उसे भी बातें करने की भनभनाहट सुनाई दी। लेकिन शब्द साफ-साफ समझ में नहीं आ रहे थे। दोनों संभल कर आवाज की ओर बढ़ चले। आगे गलियारा बाईं ओर घूम गया था। बातें करने की आवाज धीरे-धीरे तेज होती जा रही थी। इसका मतलब था कि वे सही दिशा में बढ़ रहे थे।

"तुम पीछे रहो। मैं आगे बढ़ कर सुनता हूं," राजेश ने कहा। फिर वह दीवार के सहारे आगे बढ़ने लगा। आगे किसी दरवाजे से रोशनी की किरणें बाहर निकल रही थीं। वह कुछ देख नहीं सका। अंदर कोई बोल रहा था, "बस, अविनाश आता ही होगा। उसके बाद हम तुरंत चल देंगे।"

यह सुनते ही राजेश घबरा गया। अगर अविनाश अभी आ गया तो..... ! बस, वह इससे अधिक नहीं सोच सका, क्योंकि अचानक उसके सिर पर एक वार हुआ और वह चीख मार कर गिर पड़ा। उसकी चेतना लुप्त हो गई। अपनी जेब में भरे हुए पत्थरों का वह कोई उपयोग न कर सका।

पर्दाफाश

राजेश ने आंखें खोलने की कोशिश की तो उसके सिर में तेज दर्द होने लगा। कुछ देर तक वह उसी तरह आंखें बंद किए पड़ा रहा। धीरे-धीरे उसे होश आया। कुछ देर पहले की घटनाएं उसके दिमाग में घूम गईं। फिर उसे सुरेंद्र की याद आई। वह भी तो उसके पीछे वहीं खड़ा था ? और नारायण भाई ? वह कहां हैं ?

"सुरेंद्र.....! नारायण भाई......!" वह बुदबुदाया और आंखें खोल कर इधर-उधर देखने लगा। उसने हाथ हिलाने की कोशिश की। देखा कि न वह हाथ हिला सकता है, न पैर। दोनों बंधे हुए हैं। कमरे की हलकी रोशनी में उसने देखा चार व्यक्ति खड़े हैं। उनमें से तीन आदमियों को वह पहचान नहीं सका। चौथे नारायण भाई थे। सुरेंद्र भी उसके पास उसी की तरह बंधा पड़ा था।

"क्यों, मजा मिल गया जासूसी करने का ?"—राजेश को होश में आते देख कर एक व्यक्ति बोला। उसके चेहरे पर घनी काली दाढ़ी थी। उसकी आंखों से क्रूरता टपक रही थी।

राजेश ने उसे पहचान लिया। यही रात को भीखू के पास आया था। राजेश ने उस व्यक्ति की बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह नारायण भाई की ओर देखने लगा। वह सोच रहा था इस समय भीखू कहां होगा ?

नारायण भाई चुपचाप खड़े थे। राजेश चक्कर में पड़ गया। वह समझ न सका कि नारायण भाई चुप क्यों हैं। वह तो उन्हीं के भरोसे यहां तक आया था। लेकिन उन्होंने तो मुसीबत में भी नहीं बचाया और अब भी चुपचाप खड़े ताक रहे हैं।

"बोलो, तुम्हें किसने भेजा है यहां ?" दाढ़ी वाले ने पूछा और राजेश के पैर पर अपने बूट से ठोकर मारी। "देखने में तो जरा-से हैं, लेकिन हिम्मत देखो इनकी, हम पर ही जासूसी कर रहे हैं।"

राजेश पीड़ा से बिलबिला उठा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। तभी उसने नारायण भाई को अपनी ओर देखते पाया। वह धीरे से पुकार उठा, "नारायण भैया !"

दाढ़ी वाला फिर आगे बढ़ आया। नारायण भाई की ओर देखकर बोला, "इसने नारायण किसे कहा ? यह तुम्हें जानता है क्या ? लेकिन तुम्हारा नाम तो.....।"

"तुम्हें गलतफहमी हो रही है, सरदार।" नारायण भाई जल्दी से बोले, "मुझे क्या मालूम यह किसको कह रहा है ! मेरा नाम क्या तुम्हें मालूम नहीं है ?"

राजेश अपनी भूल फौरन समझ गया। नारायण भाई जरूर किसी विशेष कारण से अपना भेस बदले हुए हैं !

"खैर, वह भी समझा जाएगा !"—दाढ़ी वाला गुर्राया। राजेश की ओर मुड़ कर बोला, "जल्दी बोल, तुझे किसने भेजा है ?"

राजेश अब भी चुप रहा।

"ठीक है, मत बोल। मुझे बुलवाना आता है।" कह कर दाढ़ी वाले ने अपनी जेब से छुरा निकाल लिया और उसे चमकाता हुआ बोला, "मैं दस तक गिनूंगा। अगर तू नहीं बोला, तो इस छुरे से तेरी आंखे निकाल लूंगा।" छुरा हाथ में लेकर दाढ़ी वाला राजेश के पास खड़ा हो गया। वह गिनती गिन रहा था।



"हां, बात तो ऐसी ही है," नारायण भाई बोले। "अब ये बदमाश नाव से बरियापुर जाएंगे। वहां रात के बारह बजे हीरों का एक व्यापारी आने वाला है। वह इनसे माल खरीदेगा। मैंने पुलिस को सूचना दे रखी है। वह बरियापुर में छापा मारेगी। लेकिन अब शायद इनकी योजना बदल जाए और ये वहां न जाएं। और फिर हम इस तहखाने से बाहर जाएंगे भी कैसे ?"

"मेरे हाथ में कोई नुकीली चीज चुभी है।" एकाएक सुरेंद्र चिल्लाया, "शायद दीवार में लगी कोई कील है। मैं इससे अपने हाथ की रस्सी ढीली करने की कोशिश करूंगा।"

"वह कैसे ?"

"कील में अपने हाथों की रस्सी फंसा लो," नारायण भाई की आवाज गूंजी, "फिर अपने हाथों को बारी-बारी से दाईं और बाईं तरफ घुमाओ। शायद रस्सी कुछ ढीली हो जाए। इस तरह कील से तुम्हारे हाथ में घाव हो जाएगा। लेकिन घबराना नहीं।"

"नहीं, भैया," सुरेंद्र बोला। कुछ देर तक 'खस-खस' की आवाजें गूंजती रही। फिर सुरेंद्र की चीख सुनाई दी और अगले की पल वह झटके से राजेश पर आ गिरा।

"रस्सी टूट गई ! मेरे हाथ खुल गए !" वह खुशी से चीखा, "मैं अभी आप लोगों की रस्सियां भी खोल देता हूं।" फिर सुरेंद्र ने टटोल कर नारायण भाई और राजेश के बंधन खोल दिए।

बंधन खुलते ही नारायण भाई ने अपनी जेब से पैन टार्च निकाल कर जलाई। तहखाने में हलका नीला प्रकाश फैल गया। सामने की दीवार में गड़ी लोहे की कई मोटी-मोटी कीलें दिखाई दीं। तभी पता चला कि सुरेंद्र की कलाइयों से खून टपक रहा है। नारायण भाई टार्च के प्रकाश में इधर-उधर देखने लगे। तहखाने में सब तरफ पुआल के ढेर लगे थे। अब राजेश समझ गया कि ऊपर से फेंके जाने पर भी उन्हें चोट क्यों नहीं आई। काफी ऊपर तहखाने की छत में बंद दरवाजा दिखाई दे रहा था।

"तहखाने का दरवाजा इतना ऊंचा है कि हम एक-दूसरे के कंधे पर खड़े होकर भी वहां तक नहीं पहुंच सकते !" राजेश ने तहखाने के दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

"सिर्फ दरवाजे तक ही नहीं पहुंचना है !" नारायण भाई बोले, "उसे ऊपर की ओर धकेलने के लिए जोर भी लगाना है। एक-दूसरे के कंधे पर खड़े होकर इस काम को नहीं किया जा सकता। हमें कोई और रास्ता निकालना होगा।"

राजेश और सुरेंद्र भी अपना दिमाग लड़ाने लगे।

नारायण भाई की आंखें तहखाने में इधर-उधर देख रही थीं। एकाएक उन्होंने राजेश का हाथ थाम लिया। खुशी भरी आवाज में बोले, "आइडिया ! शायद हमारा काम बन जाए। देखो, तहखाने

में पुआल के ढेर पड़े हैं। हम इन्हें उठाकर एक-दूसरे के ऊपर रख देंगे। आओ, मेरा मुंह क्या देख रहे हो ?" कह कर नारायण भाई ने पुआल का एक ढेर उठाकर तहखाने के दरवाजे के ठीक नीचे पटक दिया। उनकी देखा-देखी सुरेंद्र और राजेश भी पुआल उठा-उठाकर उस ढेर पर रखने लगे। ढेर धीरे-धीरे ऊंचा होने लगा। नारायण भाई ढेर पर चढ़ गए और वहां से सुरेंद्र और राजेश से पुआल लेकर ऊपर लगाने लगे।

"मान गए, नारायण भाई आपको ! क्या तरकीब निकाली है तहखाने के दरवाजे तक पहुंचने की।" सुरेंद्र ने कहा।

"नारायण भाई, यहां आइए जल्दी !" एकाएक राजेश चिल्लाया।

"क्यों, क्या हुआ ?" नारायण भाई ने पूछा और फिर वह पुआल के ढेर पर से कूद कर एक ही उछाल में राजेश के पास पहुंच गए।

राजेश तहखाने के कोने में खड़ा था और ध्यान से जमीन की ओर देख रहा था।

"राजेश, क्या बात है, भई ? अब कोई नया रहस्य मत खड़ा करो।" सुरेंद्र ने राजेश से कहा। वह भी राजेश की दिशा में देखने लगा।

"देखिए, यहां फर्श में..."—राजेश ने तहखाने के फर्श की ओर संकेत किया।

"हां, हां, यहां क्या है फर्श में ?" नारायण भाई ने चिढ़ कर कहा, "क्यों समय नष्ट कर रहे हो ?"

"जल्दी से नीचे बैठिए !" राजेश ने उनकी बात सुनी ही नहीं थी।

"यह लो, बैठ गया," नारायण भाई नीचे बैठते हुए बोले। "यह लड़का भी अजीब है !" लेकिन बैठते ही वह चौंक पड़े। उनके मुंह पर हवा का एक झोंका लगा—नम हवा का। "यह हवा... कहां से आ रही है ?"—वह आश्चर्य से बोले।

"जी, यही तो मैं पूछा रहा हूं।" राजेश बोला। "अभी-अभी जब मैंने यहां से पुआल उठाया, तो मेरे मुंह पर भी हवा का झोंका लगा था।"

नारायण भाई टार्च निकाल कर ध्यान से देखने लगे। कोने वाले पत्थर पर हाथ रखने से हवा मालूम होती थी। "आखिर इसका रहस्य क्या है ?" नारायण भाई फुसफसाए।

तहखाने में सुरंग

''और जोर लगाओ, पत्थर हिलता मालूम हो रहा है,'' नारायण भाई ने कहा। वह राजेश और सुरेंद्र के साथ मिल कर पत्थर को हिलाने की कोशिश कर रहे थे। कुछ देर की मेहनत के बाद तीनों उस पत्थर को उठाने में सफल हो गए। पत्थर हटते ही नम हवा का झोंका उन तीनों के चेहरों पर लगा और टार्च की रोशनी में दिखाई दी– गड्ढे में नीचे उतरती हुई संकरी सीढ़ियां।

''तहखाने में सुरंग !'' राजेश और सुरेंद्र एक साथ चिल्लाए। ''हूं,'' नारायण भाई हाथ आगे बढ़ा कर टार्च की रोशनी में ध्यान से देखने लगे। छोटी-छोटी सीढ़ियां एकदम टूटी हुई थीं। लगता था बरसों से किसी आदमी ने उन सीढ़ियों पर पैर नहीं रखा।

''बदमाश भी अच्छे बेवकूफ निकले। हमें ऐसे तहखाने में बंद किया जिसमें से बाहर निकलने के लिए सुरंग मौजूद है।''

''नहीं सुरेंद्र, उन लोगों को बेवकूफ मत समझो,'' नारायण भाई बोले। ''वे लोग बहुत ही क्रूर और चालाक हैं। मैं समझता हूं कि इस सुरंग के बारे में उन लोगों को कुछ भी पता नहीं है।''

''वह क्यों ?'' राजेश पूछ रहा था।

''तुमने कहा था कि यहां से पुआल उठाते समय तुम्हारे मुंह पर हवा लगी थी। इसका मतलब है कि वह रास्ता पुआल के नीचे दबा हुआ था। अगर हम पुआल न हटाते तो इस सुरंग का हमें भी कभी पता न चलता। और तुम्हीं सोचो, अगर बदमाशों को पता होता तो क्या वे हमें इस तहखाने में बंद करते ?'' नारायण भाई बोले। ''वे लोग तो यहां अभी सिर्फ दो-तीन से आए हैं। इससे पहले यह कोठी वर्षों से बंद पड़ी थी !'' फिर एकाएक बोले, ''अरे मैं भी कहां बातों में उलझ गया। सबसे पहले तो हमें बाहर निकलना चाहिए।''

''आओ,'' कह कर नारायण भाई गड्ढे में उतर पड़े। पीछे-पीछे राजेश और सुरेंद्र थे।

''संभल कर ! सीढ़ियों की हालत बहुत खराब है,'' नारायण भाई ने चेतावनी दी।

सुरंग की सीढ़ियां नीचे उतरती जा रही थीं। दोनों ओर की दीवारों से पानी चू रहा था। सीढ़ियों पर फिसलन भी हो रही थी। तीनों संभल-संभल कर उतरते रहे। अब समतल जमीन आ गई थी और रास्ता फिर ऊपर की ओर चढ़ने लगा था।



एकाएक नारायण भाई ने टार्च बुझा दी। सब तरफ घुप्प अंधेरा छा गया।

"सामने कुछ धुंधलका दिखाई दे रहा है और पानी की आवाज आ रही है," नारायण भाई ने धीरे से कहा—"शायद हम सुरंग से बाहर निकलने वाले हैं।"

तीनों ध्यान से इधर-उधर देखने लगे। राजेश ने आगे कदम बढ़ाया तो उसके बदन में कांटे चुभे और पत्तों की सरसराहट सुनाई दी। "उई ! सुरंग के मुंह पर कांटेदार झाड़ियां हैं।"

"लेकिन हम टार्च नहीं जला सकते," सुरेंद्र बोला। "कांटों की चुभन सहनी पड़ेगी। अगर टार्च जलाई, तो हो सकता है बदमाश हमें देख लें।"

कांटेदार झाड़ियों में उलझते हुए तीनों आगे बढ़ चले। लेकिन रास्ता नहीं मिल रहा था। सब तरफ झाड़ियां रास्ता रोके खड़ी थीं। सभी के शरीर कांटों से लहू-लुहान हो गए। अंत में एक तरफ आगे बढ़ने का रास्ता मिला।

"बस, आंखों का ध्यान रखना। कांटे न लगने पाएं," नारायण भाई बोले। "बाकी मरहम-पट्टी बाद में की जाएगी।"

कुछ देर बाद वे तीनों झाड़ियों से बाहर आ गए। सामने नदी का पानी धुंधला-सा दिखाई दे रहा था। राजेश ने इधर-उधर देखा। वह अंदाजा लगा रहा था कि वे कहां खड़े हैं। तभी पास ही आहट सुनाई दी। वे लोग फौरन झाड़ियों में दुबक गए। बाईं ओर थोड़ी दूरी पर तीन छायाएं झाड़ियों के पीछे से निकलीं और नदी की ओर बढ़ चलीं।

"वे तीनों जा रहे हैं," सुरेंद्र फुसफुसाया।

नदी की ओर बढ़ते हुए व्यक्तियों में से एक बोला, "मरने दो सालों को। अब यहां कौन आएगा उनकी खोज-खबर लेने ? जासूसी करने की खूब सजा मिलेगी।"

राजेश उसे पहचान गया। यह बदमाशों के सरदार दाढ़ी वाले की आवाज थी। क्रोध से उसकी मुट्ठियां कस गईं। फिर मन-ही-मन हंसी भी आ गई, "बड़े चतुर बनते हैं। पता नहीं है कि हम उनके शिकार से बच निकले हैं।"

अब वे तीनों बदमाश ठीक उनके सामने खड़े थे। बीच में मुश्किल से बीस-पच्चीस गज का फासला था।

"बस, हमें बरियापुर चलना है न ?" सामने से आवाज आई।

"नहीं, अब प्रोग्राम बदल दो।" यह दाढ़ी वाला बोल रहा था, "हम बरियापुर से बीस मील पहले ही उतर पड़ेंगे, हरिपुर गांव के पास। वहां का सराय वाला मेरा दोस्त है। एक-दो दिन वहां छिप कर रहेंगे। फिर आगे की योजना बनाएंगे।"

"तब हम कार से क्यों न चलें ?"

"तुम पागल तो नहीं हो गए हो, अविनाश ?" दाढ़ी वाला क्रोध से बोल रहा था "जानते नहीं, हर सड़क पर पुलिस का पहरा है ! जयनगर एक्सप्रेस वाली लूट के बाद पुलिस और भी सतर्क हो गई है। ऐसे में यात्रा केवल नदी से ही सुरक्षित है।"

कुछ देर चुप्पी रही। फिर दाढ़ी वाले की आवाज आई, "बलदेव, तुम लोग जाकर ओढ़ने के लिए कंबल वगैरह ले आओ। और हां, जरा ध्यान से देख लेना, वहां ऐसा कोई संकेत न छूट जाए जिससे पुलिस बाद में हमारा पीछा करे।"

राजेश ने देखा कि एक व्यक्ति नाव पर चढ़ रहा है और बाकी दो हवेली की ओर लौट रहे हैं। बस, यही मौका था। तीनों ने आपस में सलाह की और हमले के लिए तैयार हो गए। दोनों बदमाश आराम से हवेली की ओर बढ़ रहे थे। वे तो कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि आगे आफत उनकी प्रतीक्षा कर रही है। जैसे ही बदमाश इनके पास से गुजरे, तीनों उन पर टूट पड़े। अंधेरे में बदमाशों को कुछ पता न चला और हमला भी इतना अचानक हुआ था कि वे संभल न सके और गिर पड़े। उनके गिरते ही ये तीनों उन पर चढ़ बैठे। बदमाशों की कनपटियों पर इतने मुक्के पड़े कि वे बेहोश हो गए।

"इनके हाथ-पैर बांध देने चाहिए, नहीं तो होश में आते ही ये उठ कर हम पर हमला कर देंगे।" सुरेंद्र ने कहा।

"लेकिन यहां रस्सी कहां है ?" नारायण भाई बोले, "तहखाने में पड़ी होगी। पर अंधेरे के कारण वहां पहुंचना मुश्किल है। वैसे घंटा-आधा घंटा तो ये लोग इसी तरह पड़े रहेंगे। तुमने मुक्के भी तो कितने लगाए हैं बेचारों के।"

"अब इनके सरदार को काबू में करना चाहिए," राजेश बोला।

"वह नाव में है," सुरेंद्र फुसफुसाया।

"ठीक है, मैं जाता हूं," कह कर राजेश आगे बढ़ने लगा।

"ऐ, पागल हुए हो ?" नारायण भाई बोले, "सरदार बहुत खतरनाक है। तुम ठहरो, मैं जाता हूं।"

"जी नहीं, मैं जमीन पर बैठ-बैठ कर जाऊंगा। सरदार मुझे देख नहीं सकेगा," राजेश ने कहा। "वह आपको देख सकता है।"



"यह भी ठीक है," नारायण भाई को मानना पड़ा, "ठीक है, जाओ फिर।"

राजेश झाड़ियों में छिपता हुआ नाव की ओर बढ़ चला। अंधेरा गहरा था। नाव की ओर से कोई आहट नहीं मिल रही थी। सर्दी इतनी ज्यादा थी कि राजेश की देह कांपने लगी। वह नाव के पास दुबक कर बैठ गया और मौके का इंतजार करने लगा। कुछ देर बाद नाव हिली। आवाज से पता चला कि कोई नाव में चल रहा है।

"क्या बात है ! उन लोगों ने बड़ी देर लगा दी," सरदार बड़बड़ाया और नाव के सिरे पर खड़ा हो गया। राजेश बिल्कुल वहीं दुबका हुआ था। वह बुरी तरह डर गया। एक बार तो लगा कि सरदार झुक कर उसका हाथ पकड़ लेगा और फिर....। डर की वजह से उसे अपने दिल की धड़कन रुकती-सी लगी। वह पत्थर की तरह बैठा रहा। थोड़ा समय बीत गया। राजेश ने देखा कि सरदार नाव के किनारे खड़ा होकर हवेली की ओर देख रहा है।

बस, यही मौका था। एकाएक उछलकर उसने सरदार के पैर पकड़े और झटके से आगे खींच लिया। दाढ़ी वाला जोर से चीख उठा। उसका मुंह पानी में था और पैर नाव पर टिके थे। वह बुरी तरह छटपटा रहा था। राजेश कूदकर सरदार की पीठ पर बैठ गया और दनादन मुक्के मारने लगा। वैसे सरदार बहुत तगड़ा था, लेकिन वह इस तरह बेढंगेपन से गिरा कि संभल नहीं पा रहा था।

तभी नारायण भाई और सुरेंद्र दौड़ते हुए वहां आ गए। नारायण भाई ने आते ही नाव में से चप्पू उठा लिया और सरदार की पीठ पर वार करने लगे। सरदार जोर से चीख कर बेहोश हो गया।

तीनों ने पानी में से खींच कर सरदार को बाहर निकाला।

"राजेश, तुम यहीं रहो। और सुरेंद्र, तुम उन दोनों बदमाशों के पास खड़े रहो," नारायण भाई बोले—"अब कोई डर नहीं है। मैं तहखाने से रस्सियां लेकर लौटता हूं।"

लेकिन वह अपनी जगह से हिल न सके। एकाएक टार्च का भरपूर प्रकाश चमका। सबकी आंखें चौंधिया गईं। एक सख्त आवाज गूंजी "ओह, तो यह बात है। चूहे के बच्चे तहखाने से भाग निकलने में कामयाब हो गए। खैर, कोई अपनी जगह से न हिले। वरना गोली सीने से पार हो जाएगी।"

यह आवाज सरदार की थी और सामने से आ रही थी। जब राजेश ने उस व्यक्ति की तरफ देखा, जिसे नाव में पकड़ा था तो उसे काटो तो खून नहीं। वह सरदार नहीं, उनके परिवार का घरेलू नौकर भीखू था। उसकी समझ में न आया कि यह सब क्या गड़बड़ हो गया। सरदार की जगह भीखू कैसे आ गया ?

नारायण भाई के होठों से निकला "भीखू, यहां कैसे ?"

"अपने हाथ सिर के ऊपर ले जाओ। जरा भी चालबाजी न करना..." सरदार का स्वर फिर सुनाई दिया।

यहां तीनों गहरा धोखा खा गए थे। असल में सरदार नाव पर न जाकर बीच में ही रुक गया था। भीखू शाम को उससे मिलने आया तो उसने भीखू को नाव पर इंतजार करने को कह दिया था। कई घंटों से भीखू अकेला नाव पर बैठा था। सरदार नहीं चाहता था कि भीखू को कुछ मालूम हो। भीखू के वहां आने से पूरी स्थिति ही बदल गई थी। लेकिन अब कुछ नहीं किया जा सकता था।

भीखू पागलों की तरह बारी-बारी सबको घूर रहा था। उसकी अक्ल भी हैरान थी।

सरदार के हाथ में तेज टार्च थी। वह राजेश, नारायण भाई और सुरेंद्र को बखूबी देख रहा था। खुद अंधेरे में छिप गया था।

राजेश भी बुरी तरह घबरा गया था। एक चूक से सारा किया धरा मिट्टी में मिल गया था। अब उन तीनों के प्राण संकट में थे।

तभी सरदार की आवाज फिर गूंज उठी "बप्पा, तुम इन बदमाशों के बीच क्यों सहमे-सहमे खड़े हो। इधर आ जाओ, मैं इनसे जरा हिसाब चुकता कर लूं। लगता है मेरे दोनों साथी भी इनके शिकार होकर कहीं पड़े हैं। चलो, तुम जल्दी आ जाओ।"

लेकिन भीखू अब भी अपनी जगह खड़ा था। एकाएक वह हिला। उसने कहा, "बेटा, यह क्या माजरा है ?"

राजेश को आश्चर्य हो रहा था कि भीखू उनकी ओर क्यों नहीं देख रहा। इस समय यों खड़ा था जैसे उनमें से किसी को जानता ही न हो।

"बप्पा, इस समय केवल इतना समझ लो कि तुम्हारा आवारा बेटा अब लखपति बन गया है। तुम्हें किसी के घर मामूली नौकरी करने की अब कोई जरूरत नहीं। अब जल्दी से इधर आ जाओ, तो मैं इन चूहों का सफाया कर दूं।" सरदार बोल रहा था।

राजेश, नारायण भाई और सुरेंद्र तीनों बुत की तरह खड़े थे।

भीखू उनके पास से हट कर नाव से उतरा और अस्थिर कदमों से सरदार की ओर बढ़ चला। सरदार जोर-जोर से हंस रहा था। उसकी हंसी किसी दैत्य के अट्टाहास-सी राजेश के कानों में चुभ रही थी। वह मौत की हंसी थी। वे तीनों जानते थे कि भीखू के उसके पास पहुंचते ही सरदार की पिस्तौल गोलियां उगलेगी और.....

भीखू टार्च के प्रकाश के दायरे से गुजर कर पीछे खड़े सरदार के पास जा खड़ा हुआ। और फिर न जाने क्या हुआ–टार्च का प्रकाश हिला–हवा में उछला–और टार्च सरदार के हाथ से छिटक कर दूर जा गिरी। अब सुरेंद्र, नारायण भाई और राजेश प्रकाश के सामने नहीं थे। उनके लिए इतना ही बहुत था–उन तीनों ने नाव से छलांग लगाई और सामने की तरफ दौड़े। तभी अंधेरे में गुत्थम-गुत्था

होने की आवाजें आईं। भीखू गुस्से से चीख रहा था—"नहीं छोड़ूंगा, कभी नहीं छोड़ूंगा। ओ राजेश, नारायण, जल्दी..."

"मैं गोली मार दूंगा।".... यह सरदार की आवाज थी।

नारायण भाई ने जेब से टार्च निकाल कर जला ली। विचित्र दृश्य दिखाई दिया—दाढ़ी वाला सरदार चारों खाने चित जमीन पर पड़ा था और उसकी छाती पर भीखू सवार था। सरदार उठने की बार-बार कोशिश कर रहा था। पर भीखू ने उसे बेतरह दबोच रखा था और उसके चेहरे पर दनादन मुक्के बरसाए जा रहा था। सरदार की पिस्तौल उछल कर दूर जा पड़ी थी। नारायण भाई ने बढ़ कर पिस्तौल उठा ली और राजेश ने सरदार की टार्च।

राजेश ने देखा भीखू दांत पीस रहा था। उसके होंठ कांप रहे थे। साथ ही आंखों से आंसू भी बह रहे थे। फिर भीखू चिल्लाया—"राजेश, नारायण, अब कोई डर नहीं। यह कुत्ता, नरक का कीड़ा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"मैं..... खून पी जाऊंगा। मैं....." सरदार ने झटका मार कर भीखू को परे फेंक दिया और खड़ा हो गया। लेकिन वह डगमगा रहा था। आवाज भर्राई हुई थी—"बप्पा..... तूने..... तूने..... अपने बेटे को..... यह क्या किया....." और इन लोगों की दिशा में बढ़ चला। इन्होंने देखा उसके मुंह से खून बह रहा था। लेकिन तभी भीखू लपक कर उठा और टांगें पकड़ कर सरदार को पीछे खींच लिया। वह धड़ाम से गिर पड़ा। भीखू फिर उस पर सवार हो गया। गरदन व पसलियों पर घूंसे बरसाने लगा। उसकी बूढ़ी हड्डियों में जैसे किसी खूंख्वार पशु का बल आ गया था।

नारायण भाई ने सरदार से कहा—"अब तुम्हारा खेल खत्म हो चुका, सरदार। हिलने की कोशिश न करो। इधर देखो, तुम्हारी पिस्तौल अब तुम्हारा साथ छोड़ कर मेरे हाथ में आ गई है।"

उसी समय थोड़ी दूर पर रोशनियां दिखाई दीं। कार रुकने का शब्द हुआ, फिर दौड़ते हुए कदमों की आहट आई। कई टार्चें चमक उठीं। आवाज उभरी—"हैंड्स अप। चलो, सब हाथ उठा कर एक लाइन में खड़े हो जाओ।" अंधेरे में से निकलकर कई पुलिस वालों ने उन्हें घेर लिया था।

नारायण भाई ने पिस्तौल फेंक दी। राजेश बोला—"थोड़ी दूरी पर दो डाकू झाड़ियों में बेहोश पड़े हैं।" फिर नारायण भाई ने पुलिस अधिकारी को जल्दी-जल्दी सारी घटना बता दी।

राजेश को आश्चर्य हो रहा था कि इस तरह पुलिस एकाएक वहां कैसे पहुंच गई। पुलिस अधिकारी ने आगे बढ़कर राजेश से कहा—"क्यों मुन्ने, तुम्हारे रूठे हुए भाई का गुस्सा शांत हुआ या नहीं ?" और मुस्कुरा उठा।

राजेश को झटका-सा लगा। आवाज परिचित थी। लेकिन सूरत..... लेकिन फिर सब याद आ गया—यह वही व्यक्ति था जिसकी कार में वह और सुरेंद्र शाम को यहां तक आए थे। तो क्या..... तो क्या.....

"हां, बच्चों, मैं शहर का सुपरिनटेंडेंट पुलिस हूं।" वह व्यक्ति बोला, "तुम्हारी बातचीत और फिर उस सुनसान कोठी को देखकर न जाने क्यों मुझे कुछ संदेह हो उठा था। उस समय मैं पुलिस की वर्दी में नहीं था। तुम्हें यहां छोड़ कर मैं उसी समय वापस लौट गया—और इस कोठी को घेरने का प्रोग्राम बनाया। मुझे खुशी है कि मेरा अनुमान गलत नहीं निकला।" सुपरिनटेंडेंट ने बढ़कर राजेश की पीठ थपथपा दी।

दाढ़ी वाले सरदार के बाकी दोनों साथियों को भी हथकड़ी पहना दी गई। सरदार की जेब से रबर की एक थैली मिली। उसमें कई हीरे थे। टार्च के प्रकाश में हीरे चमचमा उठे।

कांस्टेबल तीनों बदमाशों को पुलिस जीप की ओर ले चले। राजेश खुश था, लेकिन भीखू सिर झुकाए चल रहा था।

जीप में बैठते समय दाढ़ी वाला बिफर उठा। भीखू की ओर मुट्ठियां तान कर चिल्लाया "बप्पा, तू कैसा बाप है। तेरी वजह से ही मैं पुलिस की गिरफ्त में आया हूं वरना..... इन चूहों का सफाया करके मैं कबी का निकल गया होता।"

सुन कर सुपरिनटेंडेंट के मस्तक पर बल पड़ गए। भीखू से बोला—"क्या मतलब ? यह तुम्हारा बेटा है क्या ? चक्कर क्या है ?"

भीखू ने आंखें उठाईं। उनमें आंसू डगमगा रहे थे। रुंधे गले से बोला—"मैं इस अभागे का बाप जरूर हूं, लेकिन यह कपूत मेरा बेटा कहलाने लायक नहीं। बीस साल हुए यह रूठ कर न जाने कहां चला गया था। उस दिन रात को यह मुझे दिखाई पड़ा, तो मैं समझा कि मेरा खोया हुआ बेटा लौट आया है, लेकिन आज जो कुछ देखा..... उससे पता चल गया—यह खोया ही नहीं किसी गहरे गड्ढे में गिर गया था। यह मेरे मालिक के मासूम बच्चों पर पिस्तौल ताने खड़ा था। तभी मैं समझ गया था कि यह मेरा बेटा नहीं, एक खूंख्वार अपराधी है और बस....." इतना कहते-कहते भीखू फूट-फूट कर रो पड़ा। राजेश की आंखें भी सूखी न रह सकीं। वह भीखू का दर्द अच्छी तरह समझ रहा था।

अगली सुबह के अखबार में हीरा चोरों के पकड़े जाने की खबर विस्तार से छपी थी। नारायण, राजेश व सुरेंद्र के फोटोग्राफ भी थे। पूरे शहर में उनके नामों की चर्चा थी कि तीन साहसी छोकरों के कारण ही इतने भयंकर अपराधी पकड़े गए।

लेकिन राजेश व नारायण भाई को पता था कि अगर भीखू न होता तो हीरा चोरों को पकड़ना तो दूर, वे लोग जिंदा भी न बचते।

उस दिन के बाद राजेश ने भीखू को कभी मुस्कुराते न देखा। इस घटना के एक मास बाद की एक सुबह। भीखू हाथ में एक पोटली उठाए राजेश के पिताजी के पास आ खड़ा हुआ—बोला, "मालिक, कुछ दिन के लिए हरिद्वार जाना चाहता हूं। तबीयत नहीं लग रही।"

उन्होंने रोकना चाहा, पर राजेश जानता था कि अब भीखू को रोकना मुश्किल है और एक सुबह वह घर में नहीं मिला। न जाने कहां चला गया था। उस बात को काफी समय बीत गया, पर भीखू नहीं लौटा—शायद अब आएगा भी नहीं। बेचारा भीखू। कुछ दिन पहले तक उसे उम्मीद थी कि शायद उसका खोया बेटा लौट आए, लेकिन बेटा जिस रूप में लौटा उससे भीखू का मन टूट गया। भीखू अपने हाथों से अपनी प्रतीक्षा का गला घोंट कर हमेशा के लिए चला गया था ।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार



ISBN-81-230-0189-4

मूल्य : 16 रुपये